

Padma Shri



PROF. CHAMAN LAL SAPRU (POSTHUMOUS)

Prof. Chaman Lal Sapru was an eminent author and educationist and an ardent believer in the power of education as a means to transform lives. Prof. Sapru spent his lifetime in furthering Hindi language, education of women, social equity for the marginalised and the cultural ethos of India among generations of students in Jammu & Kashmir.

2. Born on 22nd January, 1935, Prof. Sapru came from a rich lineage of educationists. His father Pandit Tarachand Sapru, was a pioneer of women's education and instrumental in starting first high school for girls in the district of Doda, state of J&K. Prof. Sapru received his BA from erstwhile Jammu & Kashmir University and MA in Hindi from Panjab University, Solan. He also has the honour of being among the first graduates from the erstwhile Kendriya Hindi Mahavidyalaya, Agra, now known as the Central Hindi Institute.

3. All through his professional career, Prof. Sapru taught and mentored students in marquee institutions across the J&K, and taught in numerous Government colleges such as SP College, Amar Singh College; Government Degree Colleges in Sopore, Baramulla, Anantnag and Poonch, as well as the Girls Degree College in Nawa Kadal, Srinagar. He presented the case for teaching Hindi to the official language commission established by the Government of India at a young age of 21. A few years later, he was the first lecturer of Hindi in J&K, a language that was optional until that time and taught by the Sanskrit faculty. In 1959 he was elected as a member of the Senate of Jammu & Kashmir University, the youngest person to be selected for the coveted position.

4. Prof. Sapru was an active member of Rashtra Bhasha Prachar Samiti Wardha, an institution created by Mahatma Gandhi, and a Founder Member of its J&K Chapter. He was also the Founder Member and Secretary General of the Kashmir Hindi Sahitya Sammelan and Founder of Hindi Kashmiri Sangam. He was responsible for Hindi Kashmiri Sangam's quarterly journal Kashmir Sandesh and regularly arranged for its annual conferences in Srinagar, Kashmir. He was actively involved as a member of the Hindi Shiksha Samiti and also served as a member of Hindi Central Advisory Committee Ministry of Defence & Ministry of Health for Government of India.

5. Prof. Sapru was extensively involved with social issues and was the Managing Committee member for Women's Welfare Trust; Founder secretary of Ramakrishna Ashram, Shivalaya in Srinagar and served as a Member of the Managing Committee of Ramakrishna Mission, Delhi. He was instrumental in organising the birth centenary celebrations of Swami Vivekananda at Srinagar, in 1963. He also served as Member of Dharmarth Trust founded by Maharaja Ranvir Singh in J&K. He was a member of the Indian delegation to the World Hindi Conference in Mauritius in 2018.

6. Prof. Sapru authored 18 books including the much appreciated Santoor ke Swot, Kesar our Kornai and translated several others such as the Ramkrishna Kathamrit in Kashmiri language. He was the Founder Editor of the Hindi monthly magazine Kashyap which started in valley, 1959 and later took the form of a quarterly Hindi journal Satisar from Kashmir. He also served on the editorial board of Koshur Somachar and Alood for multiple years.

7. Prof. Sapru received a number of state and national awards and honours including Ganga Sharan Singh award by President of India (2009); Sauharda Samman (1989) by the U. P. Govt; Best Book Award by MoHRD, Government of India (1989-90); State Academy of Art, Culture and Languages (1969 & 1989); Sahitya Samman Hindi Academy, Govt. of Delhi (2003).

8. Prof. Sapru passed away on 17th November, 2020.



प्रो. चमन लाल सप्रू (मरणोपरांत)

प्रो. चमन लाल सप्रू एक प्रख्यात लेखक और शिक्षाविद् थे। उनका प्रबल विश्वास था कि शिक्षा जीवन को बदलने का साधन बन सकती है। प्रो. सप्रू ने जम्मू और कश्मीर में विद्यार्थियों की कई पीढ़ियों के बीच हिंदी भाषा, स्त्री शिक्षा, पिछड़े हुए लोगों की सामाजिक बराबरी और भारत के सांस्कृतिक मूल्यों को आगे बढ़ाने में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

2. 22 जनवरी, 1935 को जन्मे प्रो. सप्रू का नाता शिक्षाविदों की एक समृद्ध परिवार से रहा है। उनके पिता पंडित ताराचंद सप्रू स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने में अग्रणी थे और उन्होंने जम्मू और कश्मीर राज्य के डोडा जिले में लड़कियों के लिए पहला हाई स्कूल शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने पूर्वगत जम्मू और कश्मीर विश्वविद्यालय से बी.ए. और पंजाब विश्वविद्यालय, सोलन से हिंदी में एम. ए. किया। उन्हें पूर्वगत केंद्रीय हिंदी महाविद्यालय, आगरा, जिसे अब केंद्रीय हिंदी संस्थान के रूप में जाना जाता है, के शुरुआती ग्रेजुएटों में से एक होने का गौरव भी प्राप्त है।

3. अपने पेशेवर जीवन में, प्रो. सप्रू ने जम्मू और कश्मीर के प्रख्यात संस्थानों में विद्यार्थियों को पढ़ाया और उनका मार्गदर्शन किया। उन्होंने कई सरकारी कॉलेजों जैसे एसपी कॉलेज, अमर सिंह कॉलेज, सोपोर, बारामूला, अनंतनाग और पूंछ के सरकारी डिग्री कॉलेजों और साथ ही नवा कदल, श्रीनगर के गर्ल्स डिग्री कॉलेज में पढ़ाया। उन्होंने 21 साल की छोटी उम्र में भारत सरकार द्वारा स्थापित राजभाषा आयोग के समक्ष हिंदी पढ़ाए जाने का मुद्दा उठाया। कुछ साल बाद, वह जम्मू और कश्मीर में हिंदी के पहले लेक्चरर बने। इससे पहले तक हिंदी वहां की ऐच्छिक भाषा थी और संस्कृत विभाग द्वारा पढ़ाई जाती थी। 1959 में उन्हें जम्मू और कश्मीर विश्वविद्यालय के सीनेट सदस्य के रूप में चुना गया। इस प्रतिष्ठित पद के लिए चुने जाने वाले वह सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे।

4. प्रो. सप्रू महात्मा गांधी द्वारा स्थापित संस्थान, राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा के एक सक्रिय सदस्य और उसकी जम्मू व कश्मीर शाखा के संस्थापक सदस्य रहे। वह कश्मीर हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक सदस्य व महासचिव और हिंदी कश्मीरी संगम के संस्थापक भी रहे। उन्होंने हिंदी कश्मीरी संगम की त्रैमासिक पत्रिका 'कश्मीर संदेश' के प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और वह श्रीनगर, कश्मीर में इसके वार्षिक सम्मेलन का भी आयोजन करते थे। उन्होंने हिंदी शिक्षा समिति के सदस्य के रूप में सक्रिय रूप से काम किया और भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय और स्वास्थ्य मंत्रालय की हिंदी केंद्रीय सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में भी अपनी सेवाएं दीं।

5. प्रो. सप्रू सामाजिक मुद्दों से व्यापक तौर पर जुड़े हुए थे और महिला कल्याण ट्रस्ट की प्रबंध समिति के सदस्य, श्रीनगर में रामकृष्ण आश्रम, शिवालय के संस्थापक सचिव और रामकृष्ण मिशन, दिल्ली की प्रबंध समिति के सदस्य भी थे। उन्होंने 1963 में श्रीनगर में स्वामी विवेकानंद का जन्म शताब्दी समारोह के आयोजन में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने जम्मू और कश्मीर में महाराजा रणवीर सिंह द्वारा स्थापित धर्मार्थ ट्रस्ट के सदस्य के रूप में भी कार्य किया। वह 2018 में मारीशस में हुए विश्व हिंदी सम्मेलन के भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य थे।

6. प्रो. सप्रू ने 18 किताबें लिखीं, जिनमें संतूर के स्वोत, केसर और कोरनाई को काफी सराहा गया था। उन्होंने बहुत सी पुस्तक जैसे रामकृष्ण कथामृत का कश्मीरी भाषा में अनुवाद भी किया। वह 1959 में घाटी में शुरू हुई हिंदी मासिक पत्रिका कश्यप के संस्थापक संपादक रहे। इस पत्रिका ने बाद में कश्मीर से निकलने वाली त्रैमासिक हिंदी पत्रिका सतिसार का रूप ले लिया था। उन्होंने कई सालों तक कोशुर सोमाचार और अलूद के संपादकीय बोर्ड में भी काम किया।

7. प्रो. सप्रू को कई राज्य और राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया है, जिनमें भारत के राष्ट्रपति द्वारा गंगा शरण सिंह पुरस्कार (2009), उ.प्र. सरकार द्वारा सौहार्द सम्मान (1989), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार (1989-90), राज्य कला, संस्कृति और भाषा अकादमी (1969 और 1989), हिंदी अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा साहित्य सम्मान (2003) शामिल हैं।

8. प्रो. सप्रू का 17 नवंबर, 2020 को देहावसान हो गया।